आधुनिक काल

Lecture No-16
16-04-2020

डॉ० अनिरुद्ध सिंह
हिन्दी विभाग

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष
'हिन्दी साहित्य का इतिहास'

आधुनिक हिन्दी साहित्य का आरंभ उन्नीसवीं सदी के मध्य में माना जाता है। यह काल भारतीय इतिहास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। 1857 की असफल क्रांति के बाद भारत में अंग्रेजी सत्ता पूरी तरह से स्थापित हो चुकी थी। अंग्रेजी सत्ता की स्थापना और विस्तार के साथ एक नये तरह का भारत भी बन रहा था। सामंती भारत समाप्त हो रहा था तो औपनिवेशिक ~~सत्ता~~ दासता के साथ पूंजीवादी समाज का भी निर्माण हो रहा था। अंग्रेजों ने जिस आधुनिक शिक्षा की शुरुआत की उसने भारत के नये बुद्धिजीवी वर्ग को अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया आधुनिक हिन्दी साहित्य का संबंध इन्हीं नये परिवर्तनों से है।

आधुनिक से क्या तात्पर्य है? क्या यह सिर्फ काल का सूचक है या इसके साथ एक विशेष युग की अवधारणा जुड़ी हुई है। जो प्राचीन और मध्य युग की

अवधारणाओं से अलग है? जब भारतीय इतिहास के आधुनिक युग की शुरुआत होती है या उससे अलग समय में? यहाँ यह भी सवाल विचारणीय है कि जब पश्चिम में आधुनिक युग का आरंभ माना जाता है तो क्या वही समय भारत में आधुनिकता का है? आधुनिकता पश्चिम की अवधारणा मानी जाती है. तो क्या आधुनिकता की कोई भारतीय अवधारणा भी है? हिन्दी के खास संदर्भ में जब हम बात करते हैं तो यह प्रश्न भी पैदा होता है कि आधुनिक साहित्य किन अर्थों में अपने पूर्ववर्ती साहित्य से भिन्न है? यह भिन्नता मुख्यतः साहित्यिक है या साहित्येत्तर?

आधुनिक युगीन हिन्दी साहित्य में हम कुछ स्पष्ट परिवर्तनों के साथ देख सकते हैं। पहली बार साहित्य में गद्य में रचना होने लगती है और उसे केन्द्रीय महत्त्व प्राप्त होने लगता है। यही वजह है कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल इसे गद्यकाल नाम देते हैं। ब्रज का स्थान खड़ी बोली ले लेती है और इस खड़ी बोली को दो रूपों को हम दो भिन्न भाषाओं - हिन्दी और उर्दू और उनकी अलग-अलग

Scanned with CamScanner

साहित्य परंपरा के रूप में उभरता और विकसित होता हुआ देखते हैं। साहित्य में पहली बार वीर, भक्ति, और शृंगार के इतर विषयों पर रचनायें होती हैं। कविता के साथ-साथ गद्य की कई नई विधायें हमारे सामने प्रकट होने लगती हैं। निबंध, कहानी, नाटक, उपन्यास, आदि से पहली बार हिन्दी पाठकों का साक्षात्कार होता है। लोकनाट्य रूपों से अलग समकालीन सवालों से जुड़े नाटक खेले जाते हैं और उसके लिए रंगमंच पर पाश्चात्य परंपरा का प्रभाव साफ तौर पर देखा जा सकता है। यही नहीं, स्वयं कविता की अंतर्वस्तु, छंद और भाषा में बदलाव आने लगता है और यह सवाल बहस का विषय बनने लगता है कि जब गद्य की भाषा खड़ी बोली है तो पद्य की भाषा का ब्रज में बना रहना कहाँ तक उचित है? लेकिन इन परिवर्तनों का संबंध किन बातों से था? क्या ये सिर्फ साहित्यिक परिवर्तन थे? क्या इनका संबंध साहित्यिक गतिविधियों और रूपों से ही था या ये परिवर्तन किसी अन्य महापरिवर्तन के हिस्से थे?

इस बात को समझने के लिए हमें यह देखना होगा कि उस समय भारत में और खास तौर पर

Scanned with CamScanner

उत्तर भारत में किस तरह के परिवर्तन घटित हो रहे थे? आधुनिक काल जिसकी शुरुआत रामचन्द्र शुक्ल ने 1843 ई० से मानी थी. उसका साहित्य के इतिहास में ही नहीं भारतीय इतिहास में भी क्या कुछ विशेष महत्व है? देशभक्ति और राजभक्ति, हिन्दू और मुसलमान, धर्म और राजनीति, वर्ण व्यवस्था और जातीय एकता, आर्य गौरव और गौ रक्षा, समाज सुधार और अतीत के प्रति गौरव की भावना, स्त्री की दशा और उसकी उन्नति, हिन्दी और उर्दू, आधुनिक शिक्षा और नयी टेक्नॉलाजी जैसे कई नये प्रश्न तत्कालीन लेखकों और बुद्धिजीवियों के बीच बहस के मुद्दे बने हुये थे। यही नहीं उस समय के प्रमुख बुद्धिजीवियो, समाज सुधारकों, लेखकों ने कई ऐसे प्रयत्न किये हैं जिसके कारण उस दौर को रिनेंसा के दौर के रूप में जाना जाने लगा। इस रिनेंसा को आधुनिक भारत की बुनियाद के रूप में ही नहीं राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की बुनियाद के रूप में भी देखा गया। 19 वीं सदी के हिन्दी साहित्य में ये राष्ट्रीय प्रश्न किस सीमा तक और किस रूपों में व्यक्त हुए हैं यह जानने से हम आधुनिक हिन्दी साहित्य

Scanned with CamScanner

की बुनियाद को समझ सकते हैं जिसने कि उसे दूसरी भारतीय भाषाओं से अलग और विशिष्ट बनाया। भले ही यह विशिष्टता सदैव सकारात्मक और रचनात्मक नहीं रही।

प्रत्येक युग के साहित्य का संबंध इस युग की परिस्थितियों से बहुत गहरा होता है वह उस युग की परिस्थितियों को बनाने वाले प्रमुख कारकों में से एक होता है, साहित्य परिस्थितियों को प्रभावित भी करता है। जब तक हम इस संश्लिष्टता को ध्यान में नहीं रखते तब तक हम आधुनिक हिन्दी साहित्य को समझने का सही परिप्रेक्ष्य नहीं विकसित कर सकते।

Scanned with CamScanner